PARLIAMENT OF INDIA (JOINT RECRUITMENT CELL)

EXAMINATION FOR THE POST OF JUNIOR PROOF READER IN LOK SABHA SECRETARY
28.11.2009

PAPER -I: PROOF READING

INSTRUCTIONS: The paper is in two parts. Part - A: Proof Reading in English and Part - B: Proof Reading in Hindi. Attempt each part in the respective answer sheets.

Time: 1 hour 30 Minutes

Marks : 100

PART - A : PROOF READING IN ENGLISH

Read the following manuscript and mark the corrections on the enclosed 'Proof for Correction' by incorporating suitable textual and marginal proof reading marks observing style of the House. (Marks: 50)

MANUSCRIPT

The promise made in August that financial assets of Supreme Court Judges will be in public domain has been more or less fulfilled with 21 judges, including the Chief Justice of India, posting the information on the Court's official website. While it is a matter of great satisfaction that the highest court in the land has gone public with details of the assets – a decision that has preceded by an intense debate about the need for greater judicial accountability – it has not gone far enough. The fact that is a voluntary declaration – something that is emphasized in the websites – makes it possible for some members of the judiciary to hold out, thereby defeating the main purposes of such disclosures, which are to promote judicial transparency and the factor to check judicial corruption. Also the twin aims can be met only by regular and updated disclosures and not via one-time declarations. In this context, greater judicial accountability is best achieved through a mechanism for mandatory public disclosure of judges' assets. Regrettably, Chief Justice of India K.G. Balakrishnan and some sections of the higher judiciary continue to strongly oppose this.

The voluntary declaration should not deter attempts to introduce legislation that mandates an accurate and full public declaration of assets. In August, the Centre was forced to withdraw the Judges (Declaration of Assets and Liabilities) Bill in Parliament, after protests cutting across party lines against a weak and self-defeating clause that disallowed declaration of assets and liabilities from being made public or questioned by any citizen, court or authority. The Centre would do well to reintroduce the legislation after making the necessary changes in the offending clause. It is important to note that the current debate about making the necessary changes in the offending clause. It is important to note that the current debate about making the judiciary more transparent takes place against the backdrop of the Supreme Court's ruling that the nation's highest court falls within the purview of the Right to Information Act. Public faith in the judicial system will improve only if the functioning of the higher courts is open to public scrutiny. Where is the case for keeping the higher

PROOF FOR CORRECTION

The promise made in august that financial assets of Supreme Court Judges will be in public domain has been more or less fulfilled with 21 Judges including the Chief Justice of India, posting the information on the Court's official website. While it is a matter of great satisfaction that the highest court in the land has gone public with details of the assets – a decision that has preceded by an intense debate about the need for greater judicial accountability – it has not gone far enough. The fact that is a voluntary declaration –something that is emphasized in the websites – makes it possible for some members of the judiciary to hold out, thereby defeating the main purposes of such disclosures, which are to promote judicial transparency and the factor to check judicial corruption.

Also the twin aims can be met only by regular and updated disclosures and not via one-time declarations. In this context greater judicial account-ability is best achieved through a mechanism for mandatory public disclosure of judges assets. Regrettably, Chief Justice of India K.G. Balakrishna and some sections of the higher judiciary continue to strongly oppose this.

The Voluntary declaration should not deter attempts to introduce legislation that mandates an accurate and full public declaration of assets. In August, the Centre was forced to withdraw the Judges (Declaration of Assets and Liabilities Bill in Parliament, after protests cutting across party lines against a weak and self-defeating clause that disallowed declaration of assetsand liabilities from being made public or questioned by any citizen, court or authority. The Center would do well to reintroduce the legislation after making the necessary changes in the offending clause. It is important to note that the current debate about making the necessary changes in the offending clause. It is important to note that the current debate about making the judiciary more tr5ansparent takse place against the backdrop of the Supreme Courts ruling that the nation's highest court falls within the purview of the Right to Information Act public faith in the judicial system will improve only if the functioning of the higher courts is open to public scrutiny. Where is the case for keeping the higher judiciary insulated from the RTI when the office of the President of india comes under its ambit ? How can a judiciary that endorses the Election commissions's bid to make the declaration of assets of candidates to elected office mandatory sing a different tune when, it comes to its own functioning? The higher judiciary must be open to supporting any mo9ve that enhances judicial transparency and at the same time, safeguards judicial independence.

भाग-बी-प्रूफ रीडिंग (हिन्दी)

नीचे दिये गये अर्थों का प्रूफ चिन्ह बतायें जो पंक्ति के किनारे पर लिखे जाते हैं। प्रूफ चिन्ह संलग्न उत्तर पुस्तिका में लगायें।

- पैरा इन्डेन्ट
- नया पैराग्राफ
- यहां पर जोडें
- हाईफन लगायें
- कोई परिवर्तन नहीं करें 5.
- प्रमाणित करें
- इटैलिक बदलें
- सीधा करें
- पैराग्राफ नहीं 9.
- पूर्णविराम लगायें 10.
- रोमन अक्षर 11.
- बोल्ड करें
- स्थान बदलें 13.
- लघु कोष्ठक लगायें
- स्पेश बराबर करें

नीचे दिए गए प्रूफ चिन्हों के अर्थ उत्तर पुस्तिका में बतायें। (७ चे अंक)

1, _	⊗	9.	bf	
2.	2)	10.	141	
3.		11.	#	
4.	E	12.	V	
5.	V"	13.	A	
6.	3/	14.		1 1-7
7.	ωf	15.	12/m	
8.	tre			

निम्नलिखित पक्तियों को पढ़कर सलंग्न उत्तर पुस्तिका में प्रूफ चिन्ह लगायें।

शब्दावली निर्माण का कार्य भाषा आधुनिकीकरण कार्यक्रम का एक अंग है। शब्दावली का विकास एक अविरल प्रक्रिया है क्योंकि ज्ञान और तकनीकी शब्द दोनों का विकास साथ-साथ होता है। ज्ञान की कोई भी नई खोज स्वभावतः भाषा से नई शब्दावली, अभिव्यक्ति या शैली की अपेक्षा करती है। जो व्यक्ति किसी भी नए विचार या वस्तु की खोज करता है, वही अपनी भाषा में उसे शब्द भी देता है। शब्दावली के विकास की सहज प्रक्रिया तो यह है कि कोई भी नया शब्द मानकता प्राप्त करने से पहले कुछ समय प्रयोग की प्रक्रिया से गुजरे और प्रयोगसिद्ध होने पर सामाजिक स्वीकृति प्राप्त करे। लेकिन जब कोई भाषा-समाज से तकनीकी ज्ञान ग्रहण करता है तो उसे उस भाषा-बजाय किसी दूसरे भाषा-समाज की शब्दावली भी ग्रहण करनी पड़ती है। इस शब्दावली के आधार पर फिर वह अपनी भाषा में पर्यायों का निर्माण करता है। इस प्रकार पर्याय-निर्माण की संकल्पना में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में अनुवाद प्रक्रिया निहित है क्योंकि मौलिक विशेषज्ञ ज्ञान और अनुवाद पर्याय के बीच एक मध्यस्थ शब्दावली की स्थिति रहती है, जैसे भारत के संदर्भ में अंग्रेजी शब्दावली मध्यस्थ शब्दावली की भूमिका निभा रही है।

ऐसी स्थिति में जो भाषा-समूह मध्यस्थ शब्दावली के आधार पर अपने लिए तकनीकी शब्दावली विकसित करना चाहता है उसे शब्दावली विकास की सहज प्रक्रिया के विपरीत एक भिन्न प्रक्रिया का अनुसरण करना पड़ता है। उसे सबसे पहले नई शब्दावली के लिए अपनी भाषा में पर्याय का निर्धारण करना होता है और फिर उसके व्यवहार में आने और प्रयोगसिद्ध होने से पहले ही उसे मानक या प्रतिमान के रूप में प्रयोक्ताओं के समक्ष प्रस्तुत करना पड़ता है। ऐसा करते समय शब्दावली विकास और निर्माण की प्रक्रिया को नियोजित कर सही दिशा देना आवश्यक होता है, अन्यथा शब्दावली के क्षेत्र में अराजकता की स्थिति पैदा हो सकती है। इस परिस्थिति में भाषा-प्रयोक्ताओं की सामाजिक और भाषिक यर्थाथताओं और शब्दावली-निर्माण के व्याकरणिक नियमों के बीच संतुलन बनाए रखना और प्रयोक्ताओं की प्रतिक्रियाओं के प्रति सजग रहना आवश्यक है।

शब्दावली विकास का कार्यक्रम हाथ में लेते ही आयोग ने सबसे पहले अखिल भारतीय स्तर पर तकनीकी शब्द-निर्माण के नए सिद्धांत और मार्गदर्शी नियम निश्चित किए और कार्यप्रणाली का एक मॉडल विकसित किया। आयोग ने सभी राज्य सरकारों की उन संस्थाओं को भी इन सिद्धांतों का पालन करने का निर्देश दिया जो अपनी-अपनी भाषाओं में तकनीकी शब्दावली-निर्माण का कार्य कर रही थी।

उत्तर पुस्तिका

1.	
1.	पैरा इन्डेन्ट
2.	नया पैराग्राफ
3.	यहां पर जोड़ें
4.	हाईफन लगायें
5.	कोई परिवर्तन नहीं करें
6.	प्रमाणित करें
7.	इटैलिक बदलें
8.	सीधा करें
9.	पैराग्राफ नहीं
10.	पूर्णविराम लगायें
11.	रोमन अक्षर
12.	बोल्ड करें
13.	स्थान बदलें
14.	लघु कोष्ठक लगायें
15.	स्पेश बराबर करें

2.

1.	9.
2.	10.
3.	11.
4.	12.
5.	13.
6.	14.
7.	15.
8.	

शब्दावली निर्माण का कार्य भाषा आधूनीकीकरण कार्यक्रम का एक अंग है। शब्दावली का विकास एक अविरल प्रक्रिया हैं क्योंकि ज्ञान और तकनिकि शब्द दोनों का विकास साथ होता है। ज्ञान की कोई भी नई खोज स्वभावत भाषा से नई शब्दावली, अभिव्यक्ति या शैली की अपेक्षा करती है। जो व्यक्ति किसी भी नए विचार या वस्तु कि खोज करता है, वही अपनी भाषा में उसे शब्द भी देता है। शब्दावली के विकास की सहज प्रक्रिया तो यह है की कोई भी नया शब्द मानकता प्राप्त करने से पहले कुछ समय प्रयोग की प्रक्रिया से गुजरे और प्रयोगसिद्ध होने पर सामाजिक स्वीकृति प्राप्तकरे। लेकिन जब कोई भाषा - समाज से तकनीकी ज्ञान ग्रहण करता है तो उसे उस भाषा-बजाय किसी दूसरे भाषासमाज की शब्दावली भी ग्रहण करनी प्डती है। इस शब्दावली के आधार पर फिर वह अपनी भाषा में पर्यायों का निर्माण करता है। इस प्रकार पर्याय-निर्माण की संकल्पना में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में अनुवाद प्रक्रीया निहत है क्योंकि मौलिक विशेषज्ञ ज्ञान और अनुवाद पर्याय के बीच एक मध्यस्थ शब्दावली की स्थिति रहती है, जैसे भारत के सदर्भ में अंग्रेजी शब्दावली मध्यस्थ शब्दावली की भूमिका निभा रही है। ऐसी स्थिति में जो भाषा-समूह मध्यस्थ शब्दावली के आधार पर अपने लिए तकनीकी शब्दावली विकसित करना चाहता है उसे शब्दावली विकास की सहज प्रक्रिया के विपरित एक भिन्न-भिन्न प्रक्रीया का अनुसरण करना पड़ता है। उसे सबसे पहले नई शब्दावली के लिए अपनी भाषा में पर्याय का निर्धारण करना होता है और फिर उसके व्यवहार में आने और प्रयोगसिद्ध होने से पहले ही उसे प्रतिमान के रूप में प्रयोक्ताओं के समक्ष प्रस्तुत करना पड़ता है। ऐसा करते समय शब्दावली विकास और निर्माण की प्रक्रिया को नियोजित कर सही दिशा देना आवश्यक होता है अन्यथा शब्दावली के क्षेत्र में अराजकता की स्थिति पैदा हो जाती है। इस परिस्थिति में भाषा-प्रयोक्ताओं की सामाजिक और भाषक यर्थाथताओं और शब्दावली-निर्माण के व्याकरणिक नियमों के बीच संतुलन बनाए रखना और प्रयोक्ताओं की प्रतिक्रियाओं के प्रति संजग रहना आवश्यक है।

शब्दावली विकास का कार्यक्रम हाथ में लेते ही आयोग ने सबसे पहले भारतीय स्तर पर तकनीकी शब्द-निर्माण के नए सिद्धांत और मार्गदर्शी नियम निश्चित किए और कार्यप्रणाली का एक मॉडल विकसीत किया। आयोग ने सभी राज्य सरकारों की उन संस्थाओं को भी इन सिद्धांतों का पालन करने का निर्देश दिया जो अपनी-अपनी भाषाओं में तकनीकी शब्दावली-निर्माण का कार्य कर रही थी।

Student Bounty.com

PARLIAMENT OF INDIA (JOINT RECRUITMENT CELL)

EXAMINATION FOR THE POST OF JUNIOR PROOF READER IN LOK SABHA SECRETA

28.11.2009

PAPER -II: ESSAY AND GRAMMAR

INSTRUCTIONS: The paper is in two parts. Part - A: English Essay and Grammar and Part - B: Hindi Essay and Grammar. Attempt both the parts in separate answer sheets.

Time: 2 hours Marks: 100

PART 'A': ENGLISH ESSAY AND GRAMMAR

1.	Write an essay on	any one of the follow	ving topics in about 3	00 words: (40 marks)
(i (i (i	i) Decision of a c ii) Protection of th v) Making the pre	areer is often driven ne environment is no sent system of educ	ed communication in l by necessity rather th w a global requirement ation relevant to the u letely changed your o	nan choice nt Inderprivileged learner
2.	ill in the blanks cho	osing the most suital	ole option from the ch	oices given below:
222				(10 marks)
(i)	At the polling station	n some people came _	_ foot.	
****	(A) on	(B) by	(C) at	(D) from
(ii)	In those days, every	(B) by morning I go jog	ging with my father.	
*****	(A) WIII	(B) would	(C) can	(D) may
(iii)			short two day training.	
	(A) can be mastered	(B) must be mastered	(C) is to be mastered	(D) need be mastered
(iv)	No one knows what			
	(A) does he want	(B) he wants	(C) he is wanting	(D) does he want?
(v)		scussed his suggestion		
	(A) have left	(B) has left	(C) had left	(D) was leaving
(vi)	If I him, I will gi	ve him your message.	17.20	
7. 715	(A) saw	(B) shall see	(C) see	(D) have seen
(vii)	it was one of bi	ggest mistakes that I h	ave ever made.	
4.000	(A) my	(B) mine	(C) a	(D) the
(viii)	However hard he	, he could not lift the s	uitcase.	
	(A) tries	(B) could try	(C) tried	(D) had tried
(ix)	She was one of the r	nicest people taug	ght us.	
1	(A) ever	(B) that ever	(C) whomever	(D) whichever
(x)	They wanted to know		140	
	(A) are we going?	(B) were we going?	(C) we are going	(D) we were going

PART-B: HINDI ESSAY AND GRAMMER

1.	निम्नलिखित में से	विन्शी	उक	विषय	पर	300	शब्दों में	निबंध	लिखिए	
----	-------------------	--------	----	------	----	-----	------------	-------	-------	--

(40 अंक)

- (क) हमारा पड़ोसी चीन
- (ख) कम्प्यूटर, इंटरनेट और बच्चे
- (ग) पिघलते ग्लेशियर और हमारा भविष्य
- (घ) राष्ट्रमंडल खेलों का आयोजन
- (ड़) विकास की होड़ में भारत और किसानों द्वारा आत्महत्याएं

2. निम्नलिखित वाक्यों में अशुब्खियों का शुधार कीजिए :

(4 अंक)

- (क) तुम तुम्हारा काम पूरा करो ।
- (ख) मैंने आज स्कूल नहीं जाना ।
- (ग) मेरे माताजी आए हैं।
- (घ) सभी सात खिलाड़ी आउट हो गया ।

3. सही शब्द का चयन की जिए:

(4 अंक)

- (क) आर्शिवाद/आशीर्वाद
- (ख) कृपया / कृप्या
- (ग) श्रंगार/श्रृंगार
- (घ) तादाद/तादात

4. रिक्त स्थानों की पूर्ति शही शब्द चुनकर कीजिए:

(2 अंक)

- (क) वह अपने ही लोगों की ————से पीड़ित था । (अपेक्षा/उपेक्षा)
- (ख) भाषाई ——— हमारे देश की विशिष्टता है । (विविधता / भिन्नता)